

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • मंगलवार • 20 अगस्त • 2024

टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन कैल्शियम व खनिज की प्रचुर मात्रा

कानपुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय से संबद्ध निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अनिल सिंह ने टमाटर की खेती के वारे में सलाह जारी की है। उन्होंने बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन व खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में पोषक तत्वों का समृद्धि (विटामिन सी) पाया जाता है, जिसे टमाटर का सबसे महत्वपूर्ण गुण माना जाता है। टमाटर में विटामिन सी का अतिरिक्त कैरोटिनाइड्स एवं अन्य पोषक तत्वों का भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

डॉ. सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का उचित समय अगस्त का महीना होता है, जिससे टमाटर की खेती की शुरुआत में टमाटर निकलना आसान होता है। टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे की दूरी से पंक्ति की दूरी 60 गुणा 60 सेंटीमीटर रखने को कहा और पौध रोपाई के बाद सिंचन करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि

यदि मेड़ बनाकर टमाटर की रोपाई किसान करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग होना चाहिए। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के वारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फसल अच्छी होती है। डॉ. सिंह ने बताया कि अंतः फसल के रूप में

टमाटर में पाया जाता है विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट लाइकोपीन

धनिया, कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिनसे अतिरिक्त आय होती है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिये

पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन गेंदा की रोपाई करें, जिससे कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फलस्वरूप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी। डॉ. सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है, लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाएने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

सत्य का असर समाचार पत्र

Tuesday 20th August 2024

website: 777777 7777 9956834016

सत्य का असर समाचार पत्र **पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम समय:- डॉ० अनिल कुमार सिंह



कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए

जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ० अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 x 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है। डॉ० सिंह ने बताया कि अंतः फसल के रूप में धनिया, कद्दू, वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरूप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी। डॉ० सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है। लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाते से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।



3:54 PM



3:54 PM



3:54 PM



टमाटर में पाये जाते हैं कार्बोहाइड्रेट, विटामिन कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण

अगस्त माह में टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय

कानपुर, 19 अगस्त। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनन्द कुमार सिंह की ओर से दिये गये निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में किसानों को वैज्ञानिक जानकारी पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ. अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी साठ बाई साठ सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी। उन्होंने



कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अज्छी होती है।

डॉ. सिंह ने बताया कि अंत- फसल के रूप में धनिया, कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरूप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी। डॉ. सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है। लेकिन अज्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

किसानों को फसल अवशेष का प्रबंधन करना सिखाएगा सीएसए

जासं, कानपुर : चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) ने पांच जिलों रायबरेली, हरदोई, इटावा, लखीमपुर खीरी और कानपुर देहात के किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन सिखाने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्रों की मदद से इन जिलों में किसानों को फसल अवशेष के उचित प्रबंधन की तकनीक सिखाई जाएगी। जिससे वह अपने खेत में ही प्यार को जलाने के बजाय खाद में परिवर्तित कर सकें।



दवा छिड़काव से धान फसल के अवशेष प्रबंधन की जानकारी देते विज्ञानी ● फाइल फोटो

लिए विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानी गांवों में जाएंगे। इस साल सीएसए ने पांच जिलों के 25 गांवों को प्रयोग कार्य के लिए चुना है। इन गांवों में किसानों के खेत का फसल अवशेष प्रबंधन विश्वविद्यालय की ओर से किया जाएगा। इस कार्य में प्रयोग होने वाली मशीनों और रसायन समेत सभी सुविधाएं सीएसए की ओर से उपलब्ध कराई जाएंगी।

फसल अवशेष प्रबंधन और प्रदूषण का संबंध

- 10 क्विंटल धान प्यार जलाने से प्रदूषण उत्सर्जन
- सल्फर डाइआक्साइड : 2 किग्रा
- राख : 199 किग्रा
- कार्बन डाइआक्साइड : 1460 किग्रा
- कार्बन मोनोआक्साइड : 60 किग्रा

इसलिए जरूरी है फसल अवशेष प्रबंधन

सीएसए के मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने बताया कि फसल अवशेषों के भूमि में सड़ने से खेत की उर्वरा शक्ति, भौतिक गुणों व भूमि में मौजूद सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में सुधार होता है। इससे फसलों का उत्पादन भी बढ़ जाता है। खरीफ फसलों में धान के अलावा

वाजरा, मक्का, दलहन और रबी फसलों में गेहूँ के अलावा उड़द, ढेंचा, सनई का फसल प्रबंधन किया जाता है। मल्टर व हेपीसीडर के प्रयोग से 18.04 प्रतिशत, यंत्रिकरण से 27.2 प्रतिशत तथा सुपरसीडर के प्रयोग से 6.8 प्रतिशत गेहूँ की उपज में वृद्धि पाई गई है।

10 क्विंटल प्यार को खेत में सड़ाने से उर्वरा वृद्धि

नाइट्रोजन : 5.5 किग्रा	पोटाश : 25 किग्रा
फास्फोरस : 2.3 किग्रा	गंधक : 1.2 किग्रा

किसानों को ऐसे दिया जाएगा प्रशिक्षण

योजना के तहत गांवों में कृषि विज्ञान केंद्रों के स्तर से भूमि सुधार कार्यक्रम चलाए जाएंगे। इसके लिए किसानों का प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम, मेला, दीवार पेंटिंग और प्रदर्शन कार्यक्रम कराए जाएंगे। विभिन्न गांवों में फसल अवशेष प्रबंधन से जुड़े यंत्रों का प्रदर्शन भी किया जाएगा जिसमें मल्टर और हेपीसीडर, सुपरसीडर शामिल हैं।

सीएसए से जुड़े पांच जिलों के कृषि विज्ञान केंद्रों को फसल अवशेष प्रबंधन योजना में शामिल किया गया है। इसके तहत पूरे जिले के किसानों को फसल अवशेष का प्रबंध करना सिखाया जाएगा। 25 गांवों के किसानों के खेत पर अवशेष प्रबंधन का प्रदर्शन करने के अलावा अन्य किसानों को प्रशिक्षित भी किया जाएगा।



- डा. आरके यादव, निदेशक प्रसार सीएसए